

## एपिसोड—8

### मसालों में जैवविविधता

आलेख :डॉ. अनुराग शर्मा

अवधि : 27 मिनट

- मां : लीजिए पिता जी, चाय ।
- दादा जी : जीती रहो बहू। यह मेधा—प्रयास उठे नहीं क्या ।
- मां : कल रात भर मां जी से कहानी सुनते रहे, आप लोग जब भी आते हो तो ये छूट का ज्यादा ही फायदा उठाते हैं।
- दादा जी : चलो सोने दो वैसे भी आज इतवार ही तो है।
- मेधा : नमस्ते दादा जी।
- प्रयास : नमस्ते दादा जी।
- दादाजी : लो उठ भी गये, हमेशा खुश रहो।
- दादी : बहू.....! बेटी यह प्रकाश सुबह—सुबह कहां चला गया।
- मां : माँ जी, स्वीडन से उनके दोस्ते आ रहे हैं, बस उन्हें ही लेने एयरपोर्ट गये हैं, बस आने वाले होंगे।(घण्टी की आवाज)
- दादा जी : लो शायद आ ही गये।(दरवाजा खुलने की आवाज)
- प्रकाश : पिता जी यह मेरा दोस्त नीरज है, स्वीडन में एक बड़ी कम्पनी में जनरल मैनेजर है। नीरज यह मेरी पत्नी, माता जी और ये मेरे बच्चे मेधा और प्रयास हैं।
- मेधा—प्रयास : नमस्ते अंकल।
- नीरज : नमस्ते, नमस्ते। नमस्ते पिता जी, मां जी, और भाभी जी ! आप सब से पहली बार मिल रहा हूँ, असल में मैं कॉलेज के बाद ही बाहर चला गया था और इतने सालों बाद अब लौटा हूँ वह भी कुछ दिन के लिये।
- दादी जी : तुम्हारा भारत में कोई है !
- नीरज : हां, मां जी, यह दोस्त है न, वैसे मेरा सारा परिवार ही बाहर रहता है, मैं तो प्रकाश के भरोसे भारत आया हूँ।

- दादा जी : भई भारत में तुम्हारा स्वागत है, चलो अब नाश्ता तैयार है, नाश्ता कर लो बातें तो होती रहेंगी। चलो प्रकाश आओ।(कप प्लेटों की आवाज)
- नीरज : भाभी मैं जरा सादा ही खाना लूंगा, ब्रैड—बटर हो तो अच्छा है। यह सब मसाले वाली चीजें मेरे लिये खानी मुश्किल है, पता नहीं आप सब कैसे खाते हैं।
- प्रकाश : अरे, नीरज यह कचौड़ी ले, यार, इसमें मसाले थोड़े कम हैं।
- नीरज : न भई, यह मसाले अपने बस के नहीं, पेट खराब होने का डर रहता है, पता नहीं हम भारतवासी स्वाद के चक्कर में अपनी सेहत के साथ खिलवाड़ कैसे कर लेते हैं।
- दादा जी : भई, नीरज यह तुमसे किसने कह दिया कि मसाले पेट खराब करते हैं या सिर्फ स्वाद के लिये डाले जाते हैं।
- प्रकाश : हॉ नीरज, मसाले तो स्वाद के साथ—साथ सेहत के लिये भी लाभदायक है। और यह जो पेट खराब होता है, वह तो बजार के मिलावटी मसाले के इस्तेमाल से होता है।
- मेधा : इसलिये तो हम मसाले अपने दादा जी के खेतों से लाते हैं।
- प्रयास : हां, और माँ उसे घर में पीस कर तैयार करती है।
- दादा जी : बेटा यह मसाले ही हमारे देश तक विदेशियों को खींच कर लाये थे, और अब तुम विदेश जा कर मसालों से दूर हो गये।
- नीरज : विदेशी इन मसालों के लिए भारत आये थे.... वह कैसे ?
- प्रयास : अरे जब ग्रीस और रोम पैदा भी नहीं हुए थे, उससे भी सैकड़ों साल पहले कुछ विदेशी अपने जहाजों पर हमारे यहां से इत्रा, मसाले और कपड़ा मेसोपोटामिया, अरब और म्हलचज ले गये, बस फिर इन्हीं मसालों की खोज में और विदेशी नाविक आते रहे।
- दादा जी : अपने केरल की काली मिर्च सोने में तुलती थी, जितने किलो काली मिर्च उतना किलो सोना।
- दादी जी : अच्छा सोने में !

- मां : अरे तुम बेकार में नौकरी पर जाते हो,रसोई में इतना साबूत सोना और सोना पाउडर रखा है, उसे बेच कर ही सारा खर्च निकल जायेगा।(सब हंसते हैं)
- दादा जी : काली मिर्च ही क्यों, 250 ग्राम अदरक के लिये उस जमाने में विदेशी एक भेड़ देते थे, और 250 ग्राम जीवित्री के लिए तीन भेड़।
- प्रकाश : अरे जब वास्को-डी-गामा भारत से गया,तो उसके चार में से दो जहाज डूब गये थे, पर वह जो मसाले अपने साथ ले गया था, उसकी उसे पूरी यात्रा के खर्चे से 60 गुना ज्यादा कीमत मिली।
- मेधा : इतनी कीमत इन मसालों की।
- दादा जी : अरे मसालों का हमारे देश से करीब 5000 करोड़ का निर्यात होता है। और अदरक और हल्दी में हमारा उत्पादन पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा है।
- नीरज : पिता जी,आपकी मसालों के बारे में जानकारी बहुत अच्छी है, मेरे लिये तो यह सब एक खबर है।
- दादी जी : अरे इन्हें कहां पता था, यह तो हमारे गांव के पास एक कृषि विज्ञान केन्द्र है, वहीं के वैज्ञानिकों ने मसालों के बारे में बताया और पैदा करना सिखाया है।
- दादा जी : हां ठीक है, ठीक है, पर मसालों की खासियत तो तू भी जानती है। क्या अदरक, काली मिर्च और शहद का काढा नहीं बनाती हमारी खांसी के लिए।
- नीरज : दादा जी, माना आपकी बात में दम है, पर काली मिर्च या दूसरे मसाले दवाई का क्या काम करते हैं ?
- प्रकाश : काली मिर्च भारत ही नहीं पूरी दुनियां में इस्तेमाल किया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण मसाला है, इसीलिए इसे 'मसालों का राजा' कहते हैं।
- दादा जी : काली मिर्च से गले की बीमारियां, मलेरिया, बवासीर, आदि का इलाज किया जाता है। म्हलचज के लोग अपने राजाओं के शरीर को मरने के बाद सुरक्षित रखने के लिये इसका इस्तेमाल करते थे। फ्रांस और हालैण्ड में इसका इस्तेमाल कीट-पतंगों को भगाने के लिए किया जाता है।

- प्रकाश : मांस की पैकिंग और अचार, ब्रेड, आदि और कुछ पीने की वस्तुओं में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है, एक च्त्तमेमतअंजपअम की तरह, क्योंकि अपने खास गुणों की वजह से इन चीजों को सड़ने नहीं देता।
- मां : हां,और हम इसे सलाद आदि और खाने में स्वाद के लिये डालते हैं, और नीरज भइया यह जो तुम सैंडविच खाते हो, कई देशों में इसमें भी थोड़ा सी काली मिर्च का पाउडर डाला जाता है।
- मेधा : क्या अंकल अपनी सेहत के लिए चुपके-चुपके खाते हो, हमें मना करते हो। (सब हंसते हैं)
- प्रयास : पिता जी, भारत में काली मिर्च कहां उगाते हैं ?
- दादा जी : भारत में वैसे तो और भी जगह काली मिर्च उगाई जाती है, पर 95 प्रतिशत से ज्यादा केरल राज्य में पैदा की जाती है।
- प्रकाश : इसकी करीब 75 तरह की नस्लें हमारे यहां उगाई जाती हैं।
- प्रयास : हैं !! काली मिर्च में इतनी विविधता।
- मेधा : तो यह सब मसाले भी हमारी जैव विविधता का हिस्सा है।
- प्रकाश : हां, हां, क्यों नहीं,अब काली मिर्च में ही कई प्रकार हैं। एक तो काले रंग की, एक सफेद होती है जिससे थोड़ा तीखापन कम होता है, इसी तरह सूखी गोल हरी मिर्च भी होती है जो इसी काली मिर्च के परिवार का हिस्सा है।
- मां : एक ही परिवार में इतनी विविधता !
- मेधा : क्यों नहीं मां, अब देखो तुम बहुत गोरी, पिता जी थोड़े सांवले, मैं थोड़ी गोरी और होशियार, पर यह प्रयास तो पूरा सांवला और भोंदू भी।(सब हंसते हैं)
- मां : खबरदार । अपने भाई को भोंदू कहा तो। थोड़ा नटखट है, पर नालायक नहीं।
- प्रयास : कोई नहीं मां, दीदी मजाक कर रही थी।
- दादी जी : देखा कितना अच्छा है हमारा प्रयास।
- मेधा : हां, अच्छातो बहुत है।(सब हंसते हैं)
- नीरज : भाभी यह छोले में इलायची है न !

- प्रकाश : अरे वाह तो तुमने मसालेदार खाना शुरू कर दिया।
- नीरज : नहीं,नहीं, अभी तो हिम्मत जुटा रहा हूं। क्यों भाभी यह इलाईची है न, काली—काली।
- दादी जी : हां बेटा यह बड़ी इलाईची है।
- नीरज : बड़ी ! तो छोटी कौन सी होती है ?
- मां : ये, ये जो इस खीर में डली है।
- दादा जी : बेटा,जैसे काली मिर्च को मसालों का राजा कहते हैं, छोटी इलाईची को 'मसालों की रानी' कहते हैं। भारत में यह सबसे ज्यादा केरल, फिर कर्नाटक और फिर तमिल नाडु में पैदा की जाती है। यह भी दुनिया को हमारी देन है।
- नीरज : और इसमें क्या—क्या गुण हैं ?
- प्रकाश : एक छोटी इलाईची रोज शहद के साथ खाने से आंखों की रोशनी बढ़ती है। छंतअवने'लेजमउ मजबूत होता है,यानी व्यक्ति पूरी तरह स्वस्थ रहता है।
- दादी जी : छोटी इलाईची के दानों, अदरक, लौंग और शिया जीरा को मिलाकर, पीसकर खाने से पेट से जुड़ी बीमारियां ठीक हो जाती हैं और उल्टी आदि में इलाईची के दाने फायदा पहुंचाते हैं।
- नीरज : वाह मां जी, आप भी बहुत कुछ जानती हैं।
- मेधा : हमारी दादी किसी डाक्टर से कम थोड़े न हैं, वह सब कुछ जानती हैं।
- दादा जी : हां, हां.....धनवन्तरी की मां जो हैं।(सब हंसते हैं)
- प्रयास : दादा यह धनवन्तरी कौन है ?
- प्रकाश : अरे बेटा। हैं, नहीं थे। उन्हें देवताओं का वैद्य कहा जाता था। इन्हीं मसालों और जड़ी—बूटियों का प्रयोग कर वह बीमारियों का उपचार करते थे।
- नीरज : इतने पुराने समय से यह मसाले हमारे देश में मौजूद हैं !! और हमें इतना फायदा पहुंचा रहे हैं।
- दादा जी : हां बेटा, ये मसाले तो हमारी सभ्यता, संस्कृति और परंपरा का हजारों वर्षों से हिस्सा रहे हैं। इनकी विविधता की वजह से हम भी कई बीमारियों से बचे रहे और इन बीमारियों के खिलाफ हमारी प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती रही।

- मेधा : दादा जी ये बड़ी इलाईची का कोई फायदा नहीं क्या ?
- दादी जी : ऐसा हो सकता है हमारे मसालों का कोई फायदा न हो ! बड़ी इलाईची के दाने दिल और जीगर का एक जबरदस्त टॉनिक है और साथ ही साथ पेट की तकलीफ जैसे गैस में बहुत लाभकारी है।
- प्रयास : (चिल्ला कर) वाह, मेरी दादी सबसे होशियार, मैं दादी की तरफ ।(सब हंसते हैं)
- मां : दल बदलू कहीं का ।
- दादा जी : बड़ी इलाईचीकी छाल सरदर्द और दांतों के लिये बहुत फायदेमंद होती है। मुंह के छालों को भी यह ठीक करती है। इसके दानों का काढा बना कर गरारे करने से दांत और मसूड़ों की बीमारियां ठीक हो जाती हैं और तरबूज के बीज के साथ बड़ी इलाईची के दानों को मिलाकर सेवन करने से गुर्दे की पत्थरी से राहत मिलती है।
- मेधा : (चिल्ला कर) शाबास, दादा जी मैं आपकी तरफ !!
- प्रकाश : अरे, सुनती हो, अपने दोनों बच्चे गये हाथ से । अब चलो हरिद्वार चलें।(सब हंसते हैं)
- मां : हम क्यों जायें हरिद्वार, मैं भी मांजी की तरफ ।
- प्रकाश : तो फिर मैं पिता जी की तरफ, आज नीरज तू भी आ जा।(सब हंसते हैं)
- दादा जी : अरे भई, इन मसालों के लिये बंटने की जरूरत नहीं है, यह तो हमें जोड़ने के लिये है,हजारों वर्षों से इनके औषधीय गुणों की चर्चा, आयुर्वेद, यूनानी दवाई और प्राकृतिक चिकित्सा जैसे उपचारों में की जाती रही है।
- दादी जी : और यही ज्ञान हमारे पुरखों से हमें मिलता रहा पीढ़ी दर पीढ़ी। और आज तुम सबमें बंट रहा है।
- नीरज : मेरी मसालों को लेकर धारणा ही बदल गई। पिता जी बताईये न, और कौन-कौन से मसाले हैं। पर रूकिये मैं पहले यह कचौड़ी खा लूं।(सब हंसते हैं)

- प्रकाश : क्यों नीरज है न स्वादिष्ट। अब तुम जिस मिर्च से घबरा रहे हो, वह बड़े काम की है। इस हरी मिर्च में विटामिन—सी बहुत अधिक मात्रा में होता है पर एक खोज के अनुसार हरी मिर्च हमें कैंसर से भी बचाती है।
- मां : यह तो मैंने भी पढ़ा है, यह शोध चिन्नी के अकलंत बंदबमत त्मेमंतबी प्देजपजनजम ने किया था। है न !
- प्रकाश : वाह भई वाह। तुम ने नाम तक याद कर लिया। कमाल है।
- दादा जी : बेटे, इसी तरह शिमला मिर्च में मौजूद तत्व, कमर के दर्द, अजीर्णपजपे में काफी असरदार हैं। आयुर्वेद में इसके कई गुणों का जिक्र है।
- मां : पिता जी, अदरक भी काफी फायदेमंद होता है ?
- दादी जी : हां, हां, अदरक तो गुणों से भरपूर है, यह गैस की तकलीफ, दस्त, भूख बढ़ाने के लिये और दिल को भी मजबूत बनाता है। अस्थमा के मरीज अगर अदरक का सेवन काली मिर्च के साथ करें तो काफी फायदा पहुंचता है।
- दादा जी : बुखार आदि में लगने वाली प्यास में भी अदरक के जूस से लाभ होता है। अदरक और शहद तो सभी तरह की खांसी में लाभदायक है। सूजे हुए मसूड़ों में अदरक का लेप लगाने से फायदा पहुंचता है।
- नीरज : भाभी, जरा छोलों में थोड़ा अदरक और डालना। (सब हंसते हैं)
- प्रकाश : नीरज, तुम पक्के हिन्दुस्तानी होते जा रहे हो, अब तुम्हारी भी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जायेगी, जैसी हमारी है। इन गोरों की तरह बात—बात में बीमार पड़ने से जब बचे रहोगे।
- दादा जी : बेटा, ये विदेशी हमारे यहां से लौंग ले जाकर अपने सूअर के मांस के ऊपर उसका लेप लगाकर रखते थे, जिससे वह लगभग साल भर तक खराब नहीं होता था। तो हमारे मसालों ने हमें बचाने के साथ—साथ यूरोप वालों को भी भुखमरी से बचाया है।
- दादी जी : जब कोई चोट आदि लग जाये तो यह हल्दी मिला हुआ दूध पीना बड़ा लाभकारी होता है।
- प्रयास : हां अंकल। मां मुझे चोट लगने पर हर बारी हल्दी वाला दूध पिलाती है।

- मेधा : और जब भी दांतों में दर्द होता है तो मां लौंग का तेल लगाती है। दर्द गायब।
- प्रकाश : नीरज लौंग तो अफारा जैसी तकलीफों को ठीक करने में भी बड़ा कारगर है। ऐसे ही अजवाइन, जीरा और सौंफ भी पेट की तकलीफों में काफी असरदार है।
- नीरज : मैंने पढ़ा था कि हल्दी में भी कैंसर से लड़ने के गुण हैं और इसके इतने सारे गुणों की वजह से अमेरिका इस पर अपना अधिकार भी जमा रहा है।
- प्रकाश : हां, अमेरिका ने इसके औषधीय गुणों को देख कर इस पर अपना पेटेन्ट लिया था जिसे हमारे देश के लोगों ने रद्द करवा दिया।
- मेधा : पिजा जी यह पेटेन्ट क्या है ?
- प्रकाश : बेटा यह किसी और दिन समझायेंगे। नीरज हमारे जितने भी मसाले हैं, वह किसी न किसी बीमारी से लड़ने में हमारी मदद करते ही हैं।
- दादी जी : हां बेटा। अगर इन्हें दबा की तरह दें तो कोई न खाये। इन्हीं को सब्जी, दाल आदि में डाल कर जायकेदार खाना बना दो तो सभी खा लेते हैं।
- नीरज : हां मां, जैसे अब खाया, तो स्वाद पता लगा। इतने सालों में मैं तो यह भूल ही गया था।
- प्रकाश : ये मसाले, हमारी आर्थिक रूप में काफी मदद करते हैं। बहुत से मसाले सिर्फ हमारी जलवायु, वातावरण में पैदा हो पाते हैं। हालांकि और जगह उन्हें पैदा करने की कोशिश की गई पर वह स्वाद और गुण नहीं मिल पाये। इसलिये इन मसालों के रहते हमारी दुनियां में पूछ बनी हुई है।
- दादा जी : हां, बेटा इन्हीं मसालों ने हमें पूरी दुनियां से जोड़ा और पूरी दुनियां को भारत का महत्व भी यही मसाले समझा रहे हैं।
- मेधा : दाल चीनी, कड़ी पत्ता आदि सभी स्वाद और सेहत के लिये जरूरी हैं, है न मां।
- दादी जी : हां बेटा, यह मसाले जो कभी सोने में तुलते थे आज भी हमारे जीवन का सोना ही हैं।



- मां : चलो, भई इन सोने की मैं अच्छी सी सब्जी तैयार करती हूं। बताओ खाने में क्या खाओगे।
- नीरज : भाभी मैं बताऊं।
- मां : हां,हां, क्यों नहीं।
- नीरज : भाभी मैं खाऊंगा पनीर की मसालेदार सब्जी और पूरी।
- प्रकाश : वाह अपना फिरंगी दोस्त भी देसी हो गया।(सब हंसते हैं)
- दादा जी : बेटा अब तो पूरी दुनिया की जुबान पर हमारे मसाले चढ़े हैं। इंग्लैंड के एक पाठक परिवार ने तो 'पाठक' मसालों के अधिकार को लेकर झगड़ा चल रहा है। क्योंकि उनका वहां के मसालों के बाजार में एकछत्रा राज है।
- दादी जी : हां जब झगड़ रहे हैं,तो बिकता भी होगा। चलो गोरों को भी कुछ खाने का स्वाद आया, वरना सुना है उबला आलू या मांस, ब्रेड और नमक इसी से वे काम चला लेते हैं।
- नीरज : क्या मां, तुम्हें तो इन मसालों के साथ-साथ पूरी दुनियां की ादवूसमकहम है।
- दादा जी : अरे, बेटा दिनभर बहू के हाथ का खाती रहती हूं, और गप्प मारती रहती है, अब ज्ञान तो बढ़ेगा ही।(सब हंसते हैं)
- दादी जी : हां, आम और कमल ककड़ी का अचार तो तुमने डाला था न !
- दादा जी : अरे क्यों नाराज होती है ! डाला तो नहीं,पर तेरे हाथ का बना आचार खाया तो था। ऊंगलियां चाट-चाट के।(सब हंसते हैं)

—समाप्त—